**विषय: समाजशास्त्र**

**B.A. 3rd year**

**Paper: समाजशास्त्रीय चिंतन के आधार**

**विषय: डी पी मुखर्जी: सांस्कृतिक विविधता**

**डॉ वीरेंद्र सिंह यादव**

**समाजशास्त्र विभाग**

**Reference:**

**पब्लिशर: एसबीपीडी पब्लिकेशन हाउस, आगरा**

**लेखक: डॉ गोपाल कृष्ण अग्रवाल**

डी पी मुखर्जी ने जब सन 1922 में अर्थशास्त्र एवं समाजशास्त्र विभाग में प्रवक्ता के रूप में काम करना आरंभ किया उस समय राधा कमल मुखर्जी इस विभाग के अध्यक्ष थे। राधा कमल मुखर्जी मूलतः एक अर्थशास्त्री थे तथा उनका विचार था कि भारत में समाजशास्त्र के अंतर्गत मुख्य रूप से भारतीय संस्कृति की समन्वयवादी प्रकृति का अध्ययन करने के साथ ही इसमें क्षेत्रीय प्रतिमान और समस्याओं का अध्ययन किया जाना चाहिए। उन्होंने संस्कृति को समझने के लिए उसके ऐतिहासिक पक्ष पर भी बल दिया।

 **जीवन परिचय एवं कृतियां**

डी पी मुखर्जी का जन्म सन 1894 में बंगाल के एक मध्यमवर्गीय ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा बंगाल में ही हुई। उस समय बंगाल के साहित्य पर रवींद्रनाथ ठाकुर, बंकिमचंद्र और शरतचंद्र चटर्जी का अत्यधिक प्रभाव था। उन्होंने बंगाल के बवासी कॉलेज से अर्थशास्त्र और इतिहास विषय के साथ स्नातक परीक्षा पास की। उन्होंने अर्थशास्त्र विषय में एम.ए. परीक्षा उत्तीर्ण की। सन 1922 में डी पी मुखर्जी लखनऊ विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र विभाग में प्रवक्ता के पद पर नियुक्त हुए। वह अपने आपको स्वयं माकर्सवादी मानते थे लेकिन एक ब्राह्मण परिवार में जन्म लेने के कारण उनके चिंतन पर भारतीय संस्कृति का भी स्पष्ट प्रभाव था। इसी कारण उन्होंने मार्क्स के अनेक सिद्धांतों को भारतीय परंपराओं के साथ जोड़कर उनका विश्लेषण किया।

अनेक समाज शास्त्रियों का विचार है कि भारत में ‘संस्कृति का समाजशास्त्र’ स्थापित करने का श्रेय डी पी मुखर्जी को ही है। उन्होंने भारतीय संस्कृति से संबंधित अनेक समस्याओं की आलोचनात्मक विवेचना करके एक नई विचारधारा को जन्म दिया। डी पी मुखर्जी की इच्छा आरंभ से ही एक शिक्षक बनने की थी। विभिन्न विषयों पर अपने विद्यार्थियों के साथ अनौपचारिक बातचीत करना उन्हें पसंद था। एक और वह अपने विद्यार्थियों में बहुत लोकप्रिय थे तो दूसरी और वह वार्तालाप के द्वारा विद्यार्थियों को सदैव विचारों के आदान-प्रदान का प्रोत्साहन देते रहते थे। अपने शैक्षणिक जीवन में उन्होंने अपने आप को किसी एक विषय तक ही सीमित नहीं रखा। अर्थशास्त्र में प्रशिक्षित होने के बाद भी वह यह मानने लगे कि सामाजिक विज्ञानों में समाजशास्त्र का क्षेत्र सबसे अधिक व्यापक है। इसी कारण उन्हें सन 1932 में ‘ समाजशास्त्र में मूल अवधारणाएं’ नाम से एक पुस्तक लिखी जो किसी भारतीय समाजशास्त्री द्वारा मौलिक अवधारणा पर लिखी जाने वाली संभवतः पहली पुस्तक थी। यहीं से डी पी मुखर्जी को एक समाजशास्त्री के रूप में देखा जाने लगा। स्वयं उनकी रुचि भी समाजशास्त्रीय विवेचन में बढ़ने लगी। इसी के फलस्वरूप उन्होंने आधुनिक भारतीय संस्कृति, भारत में युवा वर्ग की समस्याओं तथा भारतीय समाज की विविधताओं जैसे विषयों पर भी पुस्तक लिखी। सन 1935 में कुछ नहीं यंत्रणा के साथ जब प्रांतों का शासन जनता द्वारा चुने गए प्रतिनिधियों को सौंपने का निर्णय लिया गया तब तत्कालीन उत्तर प्रदेश में कांग्रेस सरकार सत्ता में आ गई। सन 1936 में डी पी मुखर्जी को उत्तर प्रदेश में सूचना निदेशक के पद पर नियुक्त किया गया। इस पद पर रहते हुए उन्होंने बौद्धिक आधार पर अपनी कुशलता का परिचय दिया। उन्हीं के प्रयास से उत्तर प्रदेश में एक ‘ आर्थिक और सांख्यिकी ब्यूरो’ की स्थापना की गई। सन 1929 में जब द्वितीय विश्व युद्ध के मुद्दे पर कांग्रेस का ब्रिटिश सरकार से मतभेद हो जाने के कारण कांग्रेस ने अपने मंत्रिमंडल को भंग कर दिया तब डी पी मुखर्जी पुन: लखनऊ विश्वविद्यालय में आ गए। स्वतंत्रता के तुरंत बाद सन् 1947 में उन्हें ‘ उत्तर प्रदेश श्रम जांच समिति’ का सदस्य नियुक्त किया गया। सन 1951 में उन्हें विभाग में प्रोफेसर के पद पर नियुक्त किया गया। सन 1953 में जब होने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र विभाग के अध्यक्ष पद पर आसीन होने के लिए आमंत्रित किया गया तो वह लखनऊ विश्वविद्यालय को छोड़कर अलीगढ़ विश्वविद्यालय में आ गए। यही से वे है सन 1958 में सेवानिवृत्त हुए।

समाजशास्त्रीय आधार पर उनकी प्रमुख रचनाएं निम्नलिखित हैं:

1. पर्सनैलिटी एंड द सोशल साइंसेस,1924
2. बेसिक कॉन्सेप्ट्स इन सोशियोलॉजी,1932
3. मॉडर्न इंडियन कल्चर,1942
4. सोशियोलॉजी ऑफ इंडियन कल्चर,1942
5. प्रॉब्लम्स ऑफ इंडियन यूथ,1946
6. व्यूज एंड काउंटरव्यूज,1946
7. डाइवर्सिटीज,1958

**समाजशास्त्र पर डीपी मुखर्जी के विचार**

डी पी मुखर्जी के अनुसार समाजशास्त्रीय विवेचन का मुख्य आधार मानव व्यक्तित्व है। व्यक्तित्व का निर्माण करना ही समाज का मौलिक उद्देश्य होता है तथा व्यक्तित्व संबंधी विभिन्न ता ही समाज को विभिन्न समूहों और वर्गों में विभाजित करती हैं।

साधारणतया डी पी मुखर्जी को समाजशास्त्र का माकर्सवादी विचारधारा से संबंधित माना जाता है। यह उनके बारे में एक पक्षी है दृष्टिकोण है। यह सच है कि मुखर्जी ने माकर्स के द्वंद बाद का उपयोग अनेक सांस्कृतिक परिवर्तन हो तथा सामाजिक आर्थिक दशाओं को स्पष्ट करने के लिए किया लेकिन समाज शास्त्र के अध्ययन पद्धतियों के बारे में उनके विचार माकर्सवादी से पूरी तरह मेल नहीं खाते। उन्होंने अध्ययन कि जिन पद्धतियों पर बल दिया उनमें तीन पद्धतियां अधिक महत्वपूर्ण है:

* मनो समाजशास्त्रीय पद्धति
* तार्किक द्वंदात्मक पद्धति
* व्याख्यात्मक पद्धति

 **सांस्कृतिक विविधता**

डी पी मुखर्जी ने अपनी पुस्तक ‘डाइवर्सिटीज’ में भारत की सांस्कृतिक विविधता को विस्तार से स्पष्ट किया। उन्होंने सांस्कृतिक विविधता को भारतीय समाज की एक ऐसी विशेषता के रूप में स्पष्ट किया जो बहुत लंबे समय से भारतीय जनजीवन को प्रभावित करती रही है। इसे स्पष्ट करने के लिए उन्होंने जिन प्रमुख विषयों पर विचार किया, उनमें(1) संस्कृति की अवधारणा,(2) ऐतिहासिक आधार पर भारतीय संस्कृति में मिश्रण और समन्वय,(3) परंपरा एवं आधुनिकीकरण आदि मुख्य हैं। डी पी मुखर्जी के अनुसार समाजशास्त्रीय अध्ययन का प्रमुख केंद्र संस्कृति है। संस्कृति से उनका अभिप्राय केवल कुछ विशेष परंपराओं अथवा धार्मिक व्यवस्थाओं से नहीं था। उन्होंने भारतीय संस्कृति को एक ऐसी समग्रता के रूप में स्पष्ट किया जिसमें एक लंबे समय से समन्वय और संशोधन की प्रक्रिया चलती रही है। उन्होंने भारतीय समाज को सांस्कृतिक समन्वय और आत्मसात की प्रक्रिया के रूप में स्पष्ट किया। उनका उद्देश्य भारतीय संस्कृति की विविधता में एकता को स्पष्ट करना था। इसी को आधार मानते हुए उन्होंने लिखा कि भारतीय संस्कृति एक ऐसी संस्कृति है जिसका विकास बहुत से प्रजाति है समूह और संस्कृतियों द्वारा दी गई चुनौतियों का समाधान खोजने के प्रत्युत्तर से हुआ। विभिन्न युगों में इसी के फलस्वरूप भारतीय संस्कृति में अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन होते रहे तथा प्रत्येक युग में संस्कृति का एक नया संश्लेषित रूप स्थापित होता गया। इसी के फलस्वरूप भारत की संस्कृति में एक अपूर्व विविधता पैदा हुई यद्यपि अपनी समन्वयवादी प्रकृति के कारण या सांस्कृतिक एकता निरंतर बनी रही।